STARLINK NEARS INDIA LAUNCH WITH GOVT NOD

India is on the cusp of a satellite internet revolution. On June 6, Elon Musk's Starlink secured a key regulatory approval from the Indian government, paving the way for its much-anticipated commercial launch in the country.

Already operational in over 100 countries, Starlink promises high-speed, low-latency internet, especially in areas where conventional broadband infrastructure struggles to reach.

Backed by SpaceX, Starlink now joins a select group of satellite broadband players—alongside OneWeb and Reliance Jio—that have received the Indian government's preliminary nod, known as the Letter of Intent (LoI), for telecom operations. The company is currently awaiting the final Global Mobile Personal Communications by Satellite (GMPCS) license from the Department of Telecommunications. Once granted, Starlink can begin full-scale deployment of its ground infrastructure and services across the country.

Starlink's network uses thousands of low Earth orbit (LEO) satellites, much closer to Earth than traditional geostationary satellites. This positioning enables faster, more reliable internet with significantly lower latency—ideal for real-time applications like video calls, online gaming, and cloud computing.

For India, Starlink's arrival is especially significant. It can bridge the digital divide in rural and underserved regions, offering high-speed access where fiber and mobile networks have limited reach.

What's more, Starlink plans to enter the Indian market with a disruptive pricing strategy. As per The Economic Times, it is likely to offer unlimited data plans at under $10/month (around Rs. 857), making it a compelling choice for consumers and businesses alike.

With rivals like Eutelsat OneWeb, Jio-SES, and Globalstar also eyeing the Indian market, the satellite internet space is gearing up for a fierce battle. But Starlink's first-mover advantage and aggressive pricing could give it a strong head start.■

सरकारी मंजूरी के बाद भारत में लॉन्च होने के करीब स्टारलिंक

भारत सैटेलाइट इंटरनेट क्रांति के मुहाने पर है। 6 जून को एलन मस्क की स्टार लिंक को सरकार से एक महत्वपूर्ण विनियामक मंजूरी मिल गयी, जिससे देश में इसके बहुप्रतीक्षित वाणिज्यिक लॉन्च का रास्ता साफ हो गया

100 से ज्यादा देशों में पहले ही परिचालन कर रहा स्टारलिंक हाई-स्पीड, लो लेटेंसी इंटरनेट का वादा करता है, ख़ासतौर पर उन क्षेत्रों में जहां पारंपरिक ब्रॉडबैंड इंफ्रास्ट्रक्चर पहुंचने में संघर्ष करता है।

स्पेसएक्स द्वारा समर्थित, स्टारलिंक अब वनवेब और रिलायंस जियो के साथ-साथ सैटेलाइट ब्रॉडबैंड प्लेयर्स के एक चुनिंदा समूह में शामिल हो गया है, जिन्हें दूरसंचार संचालन के लिए भारत सरकार की प्रारंभिक मंजूरी मिली है, जिसे लेटर ऑफ इंटेंट (एलओआई) के रूप में जाना जाता है। कंपनी वर्तमान में दूरसंचार विभाग से सैटेलाइट (जीएमपीसीएस) लाइसेंस द्वारा अंतिम ग्लोबल मोबाइल पर्सनल कम्युनिकेशंस का इंतजार कर रही है। मंजूरी मिलने के बाद स्टारलिंक पूरे देश में अपने ग्राउंड इंफ्रास्ट्रक्चर और सेवाओं की तैनाती शुरू कर सकता है।

स्टारलिंक का नेटवर्क हजारों लो अर्थ ऑर्बिट (एलईओ) सैटेलाइट का उपयोग करता है, जो पारंपरिक जियोस्टेशनरी सैटेलाइट की तुलना में पृथ्वी के बेहद करीब है। यह स्थिति काफी लो लेटेंसी के साथ तेज, अधिक विश्वनीय इंटरनेट सक्षम होती है-वीडियो कॉल, ऑनलाइन गेमिंग और क्लॉउड कंप्यूटिंग जैसे रीयल टाइम आवेदनों के लिए आदर्श है।

भारत के लिए स्टारलिंक का आगमन विशेषरूप से महत्वपूर्ण है। यह ग्रामीण और कम सेवा वाले क्षेत्रों में डिजिटल विभाजन को पाट सकता है, जहां फाइबर और मोबाइल नेटवर्क की सीमित पहुंच है, वहां हाई स्पीड एक्सेस प्रदान कर सकता है।

स्टारलिंक एक विघटनकारी मूल्य निर्धारित रणनीति के साथ भारतीय बाजार में प्रवेश करेगा। ईटी के अनुसार यह 10डॉलर/माह (लगभग 857रु.) से कम कीमत पर असीमित डेटा प्लान पेश करेगा, जो इसे उपभोक्ताओं व व्यवसायों के लिए एक आकर्षक विकल्प बनाता है।

यूटेलसैट वनवेब, जियो-एसईएस और ग्लोबलस्टार जैसे प्रतिद्वंदी भी भारतीय बाजार पर नजर गड़ाये हुए हैं, ऐसे में सैटेलाइट इंटरनेट क्षेत्र में कड़ी टक्कर की तैयारी हो रही है। लेकिन स्टार लिंक को पहला कदम उठाने का लाभ और आक्रामक मूल्य निर्धारण इसे एक मजबूत बढ़त दिला सकता है।■